|| श्री शनि चालीसा ||

दोहा

जय-जय श्री शनिदेव प्रभु, सुनहु विनय महराज ।

करहुं कृपा हे रवि तनय, राखहु जन की लाज ॥

चौपाई

जयति-जयति शनिदेव दयाला ।

करत सदा भक्तन प्रतिपाला ॥

चारि भुजा तन श्याम विराजै ।

माथे रतन मुकुट छवि छाजै ॥

परम विशाल मनोहर भाला ।

टेढ़ी दृष्टि भृकुटि विकराला ॥

कुण्डल श्रवण चमाचम चमकै ।

हिये माल मुक्तन मणि दमकै ॥

कर में गदा त्रिशूल कुठारा ।

पल विच करैं अरिहिं संहारा ॥

पिंगल कृष्णो छाया नन्दन ।

यम कोणस्थ रौद्र दुःख भंजन ॥

सौरि मन्द शनी दश नामा ।

भानु पुत्रा पूजहिं सब कामा ॥

जापर प्रभु प्रसन्न हों जाहीं ।

रंकहु राउ करैं क्षण माहीं ॥

पर्वतहूं तृण होई निहारत ।

तृणहंू को पर्वत करि डारत ॥

राज मिलत बन रामहि दीन्हा ।

कैकइहूं की मति हरि लीन्हा ॥

बनहूं में मृग कपट दिखाई ।

मात जानकी गई चुराई ॥

लषणहि शक्ति बिकल करि डारा ।

मचि गयो दल में हाहाकारा ॥

दियो कीट करि कंचन लंका ।

बजि बजरंग वीर को डंका ॥

नृप विक्रम पर जब पगु धारा ।
चित्रा मयूर निगलि गै हारा ॥
हार नौलखा लाग्यो चोरी ।
हाथ पैर डरवायो तोरी ॥
भारी दशा निकृष्ट दिखाओ ।
तेलिहुं घर कोल्हू चलवायौ ॥
विनय राग दीपक महं कीन्हो ।
तब प्रसन्न प्रभु ह्वै सुख दीन्हों ॥
हरिशचन्द्रहुं नृप नारि बिकानी ।
आपहुं भरे डोम घर पानी ॥
वैसे नल पर दशा सिरानी ।
भूंजी मीन कूद गई पानी ॥
श्री शकंरहि गहो जब जाई ।
पारवती को सती कराई ॥
तनि बिलोकत ही करि रीसा ।
नभ उड़ि गयो गौरि सुत सीसा ॥
पाण्डव पर ह्वै दशा तुम्हारी ।

For more ‘Chalisa’, ‘Aarti’, ‘Strotam’, and much more, Visit margdarshansadhana.com

बची द्रोपदी होति उघारी ॥

कौरव की भी गति मति मारी ।

युद्ध महाभारत करि डारी ॥

रवि कहं मुख महं धरि तत्काला ।

लेकर कूदि पर्यो पाताला ॥

शेष देव लखि विनती लाई ।

रवि को मुख ते दियो छुड़ाई ॥

वाहन प्रभु के सात सुजाना ।

गज दिग्गज गर्दभ मृग स्वाना ॥

जम्बुक सिंह आदि नख धारी ।

सो फल ज्योतिष कहत पुकारी ॥

गज वाहन लक्ष्मी गृह आवैं ।

हय ते सुख सम्पत्ति उपजावैं ॥

गर्दभहानि करै बहु काजा ।

सिंह सिद्धकर राज समाजा ॥

जम्बुक बुद्धि नष्ट करि डारै ।

मृग दे कष्ट प्राण संहारै ॥

For more 'Chalisa', 'Aarti', 'Strotam', and much more, Visit margdarshansadhana.com

जब आवहिं प्रभु स्वान सवारी ।
चोरी आदि होय डर भारी ॥
तैसहिं चारि चरण यह नामा ।
स्वर्ण लोह चांदी अरु ताम्बा ॥
लोह चरण पर जब प्रभु आवैं ।
धन सम्पत्ति नष्ट करावैं ॥
समता ताम्र रजत शुभकारी ।
स्वर्ण सर्व सुख मंगल भारी ॥
जो यह शनि चरित्रा नित गावै ।
कबहुं न दशा निकृष्ट सतावै ॥
अद्भुत नाथ दिखावैं लीला ।
करैं शत्राु के नशि बल ढीला ॥
जो पंडित सुयोग्य बुलवाई ।
विधिवत शनि ग्रह शान्ति कराई ॥
पीपल जल शनि-दिवस चढ़ावत ।
दीप दान दै बहु सुख पावत ॥

For more 'Chalisa', 'Aarti', 'Strotam', and much more, Visit margdarshansadhana.com

कहत राम सुन्दर प्रभु दासा ।

शनि सुमिरत सुख होत प्रकाशा ॥

दोहा

पाठ शनिश्चर देव को, की हों 'भक्त' तैयार।

करत पाठ चालीस दिन, हो भवसागर पार॥

For more ‘Chalisa’, ‘Aarti’, ‘Strotam’, and much more, Visit margdarshansadhana.com